(January 2024). रामचरित मानस के भौगोलिक एवं सांस्कृतिक संधर्बो का विवेचन
International Journal of Economic Perspectives,*18*(01) 27-33
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROPU II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

रामचरित मानस के भौगोलिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों का विवेचन

' डॉ. कावेरी दाभड़कर , सहायक प्राध्यापक , भूगोल, शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर ,छ ग
'' डॉ सुशीला एक्का ,सहायक प्राध्यापक,भूगोल, शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर ,छ ग
''' डॉ एस आर कमलेश ,प्राचार्य ,शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर ,छ ग

संक्षेपिका ... भारत एक अर्वाचीन राष्ट्र है जहां धर्म, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान की विराट परंपराएं है। प्राचीन भारत में भौगोलिक खगोलकीय ज्ञान समृद्ध था। तात्कालिक समस्याओं के सापेक्ष्य भौगोलिक ज्ञान के स्तर एवं भौगोलिक समस्याओं के प्रति तात्कालिन भारतीयों की जागरूकता के प्रमाण मिलते हैं । (श्रीवास्तव, 1988) भौगोलिक ज्ञान की स्वाभाविक रूप से परम्परागत विरासत है । वेदों, पुराणों एवं प्राचीन भारतीय महाकाव्यों में भौगोलिक संदर्भ यत्र–तत्र वर्णित है। इसी परिपेक्ष्य मे तुलसीदास कृत रामचरित मानस अमर काव्य है जो भारतीय जीवनमूल्यो , सांस्कृतिक धरोहर को संवारने का आदर्श दस्तावेज है जो न केवल आमजनों को दिशानिर्देश देने का कार्य करता है वरन् नैतिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, सांस्कृतिक आयामों के साथ–साथ भौगोलिक संदर्भों को भी स्थापित करता है। रामचरित मानस में प्राचीन भारतीय भूगोल के दो पक्षों . .विशिष्ट भूगोल एवं सामान्य भूगोल दोनों के सापेक्ष्य उद्धरण दृष्टव्य है। खगोलीय घटनाओं के विविध पक्ष यथा– चन्द्रग्रहण, पृथ्वी की स्थति इत्यादि के साथ–साथ क्षेत्रीय भूगोल के अनेक तथ्यों का संकलन रामचरित मानस मे परिलक्षित है। पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, नगरीय स्वरूप जैसे अनेक संदर्भ रामचरित मानस में वर्णित है। हमारे अर्वाचीन साहित्य एवं प्राचीन भौगोलिक ज्ञान को वर्तमान के सापेक्ष्य अध्ययन के मूल उद्देश्य के साथ रामचरित मानस के भौगोलिक विवेचन का यह प्रयास है। संपूर्ण अध्ययन स्व–अवलोकन पद्धति पर आधारित है। जिसमें तात्कालिक अन्य रामायण ग्रंथों के उद्धरणों का भी समावेश किया गया है।
कुंजी शब्द . सामाजिक मूल्यों ,सांस्कृतिक आयामों ,नैतिक मूल्यों ,भौगोलिक खगोलीय ज्ञान ।

रामचरित मानस तुलसीदास कृत अमर काव्य है जो रामचन्द्र की जीवन गाथा का वर्णन मात्र नहीं है, वरन् जीवन के मूल्यों, सांस्कृतिक धरोहर को संवारने का एक आदर्श दस्तावेज है जो न केवल आमजन को दिशा निर्देश देने का कार्य करता है वरन समाज व राष्ट्र निर्माण की एक अनिवार्य सीढ़ी है एवं सामाजिक समरसता, परंपरा, रीति–रिवाज, सांस्कृतिक आयामों को संरक्षित करता एक लोक साहित्य है, जिसे अधिकांश भारतीयों ने स्वीकृत, अंगीकृत किया है।

रामायण काल में आते–आते भारतवर्ष का भौगोलिक ज्ञान उत्कर्ष स्थापित कर चुका था। पृथ्वी की उत्पत्ति, ग्रह–उपग्रहों की संकल्पना, पृथ्वी की गति, स्थान–दूरी, नक्षत्रों, गणितीय मान, खगोलकीय घटनाओं के साथ–साथ स्थानों, क्षेत्रों के स्वरूपों की व्याख्या, वेदों–पुराणों में अन्वेशित की जा चुकी थी। आर्यभट्ट, वराहमिहिर, बाणभट्ट, पांतजलि इत्यादि खगोलविदों ने भौगोलिक स्वरूप ज्ञान के निर्धारण को समृद्ध किया है। इसी परिप्रेक्ष्य में रामायण काल की भी महत्ता अक्षुण्ण है।

रामायण के अनेक ग्रंथों – वाल्मिकी रामायण, कर्ष रामायण, सर्वार्थ रामायण, तत्वार्थ रामायण, मैथली रामायण, प्रेम रामायण, तत्वार्थ संजीवनी रामायण, उत्तररामचरित, रघुवंशम्, प्रतिमानाटक, कम्ब रामायण, मुशुण्डि रामायण, श्रीराघवेन्द्र चरित, मंत्री रामायण, योगवाशीन रामायण, अनुमन्नरकम् आनंद रामायण, तिब्बती रामायण, पूर्वी तुर्कीस्तान की खोतामी रामायण, इंडोनेशिया की ककाबिन रामायण, जावा का सेरतराम मकेलिंग, पातानी राम कथा, थाईलैण्ड की राम कियेन इत्यादि। सभी विशिष्ट क्षेत्रीय संदर्भों में भौगोलिक व सांस्कृतिक प्रतिमानों को स्थापित किया है। मूल रामकथा के सापेक्ष्य में सभी रामायण कथाओं में भौगोलिक संदर्भों को स्थापित किया है एवं सांस्कृतिक आयामों को भी अन्वेषित एवं जन–ग्राह्य किया है।

प्रस्तुत आलेख भौगोलिक एवं सांस्कृतिक आयामों की मुख्य विषयवस्तु के साथ रामचरित मानस के अन्वेषण का प्रयास है जो स्वाध्याय पर आधारित है।

रामकथा अनेक भाषाओं में लिखी गई है। हिंदी में कम से कम 11, मराठी में 5, बांगला में 25, तमिल में 12, तुलगू में 12 तथा उड़िया में 6 रामायण है तथापि गोस्वामी जी द्वारा रचित रामचरित मानस के पूरे उत्तर भारत में विशेष स्थान है।

श्री रामायण में विश्व की संकल्पना – स्व. प्रो. मुजफ्फर अली ने तात्कालीन विश्व को एक आरेख के माध्यम से प्रस्तुत किया है। (श्रीवास्तव, 2008) जिसमें जम्बू द्वीप विश्व के केन्द्र में स्थित है। मेरू पर्वत पश्चिम में,

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27Oct 2023, Revised: 09 Nov 2023, Accepted: 18 Nov 2023, Published: Jan 2024

International Journal of Economic Perspectives,*18*(01) 27-33
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROPU II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

सोमगिरी उत्तर में एवं रसमगिरी दक्षिण में अवस्थित है। जम्बू द्वीप के उत्तर–दक्षिण में क्रमशः पांच–पांच पर्वत है। जम्बू द्वीप के चारों ओर खारे जल का समुद्र है।

श्री रामायण के अनुसार समस्त पृथ्वी पर ईक्ष्वाकु वंश के सूर्यवंशी राजाओं का अधिकार था। रामचरितमानस एवं वाल्मिकी रामायणों के विविध उदाहरणों से इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है कि ईक्ष्वाकु वंश का तात्कालिक विश्व पर पूर्ण एकाधिकार था एवं इस विशाल संघ के अंतर्गत कैकय, सिंधु, सुबीर, सौराष्ट्र, बंग, अंग, मगध, मत्स्य कौशल, कौशाम्बी, काशी, मिथिला इत्यादि राज्य सम्मिलित थे।

रामचरित मानस में राम कथानक के अंतर्गत संपूर्ण भारत के भौगोलिक स्वरूप का चित्रण प्राप्त होता है। रामचरित मानस में जिन स्थानों का उल्लेख है, उसमें चीन, तिब्बत, जावा, सुमात्रा, घोपियों इत्यादि भी शामिल है। सीता जी की खोज के लिए वानर समूह समूचे तात्कालिक विश्व में भेजे गए थे। इससे यह प्रतिपादित होता है।

रामचरित मानस में प्रादेशिक भूगोल के आयाम

अयोध्या तात्कालीन भारत का सर्वप्रभुत्व संपन्न राज्य था क्योंकि राजा दशरथ ने श्री राम के राज्याभिषेक के अवसर पर चारों दिशाओं के राजाओं को आमंत्रित किया था।

1. **अयोध्या** – भगवान श्री राम की जन्मभूमि जो सरयू तट पर अवस्थित है। यह वर्तमान समय में भी भारत का महत्वपूर्ण केन्द्र है जहां श्रीराम का विशाल मंदिर निर्माणाधीन है, राजा दशरथ की यह राजधानी थी, जो समूचे उत्तर भारत के प्रमुख नगरों में से एक था।
2. रामचरित मानस में वर्णित एक प्रमुख राज्य मिथिला है जो माता सीता की भूमि और राजा जनक का साम्राज्य है। सीता स्वयंवर के समय राम व लक्ष्मण विश्वमित्र के साथ सरयू में मगध फिर गंगा पार कर मिथिला पहुंचे थे।
3. **प्रयागराज** – यह उत्तर भारत का प्रतिनिधि नगर या जो गंगा–जमुना के संगम पर अवस्थित था। भगवान राम लला के साथ वनवास के समय एवं पूर्व में भी गंगातट पर पहुंचे थे।
4. **केकया** – केकया राज्य व्यास नदी के समीपवर्ती क्षेत्र में विस्तारित था। भगवान राम की माता कैकयी का संबंध इससे था। यह चिनाव–रावी नदियों के संगम पर राज्य की राजधानी गिरिव्रजा अवस्थित थी।
5. रामचरित मानस में भरत की वापसी हेतु दशरथ के देहावसान पर दूतों को भेजा गया था, जिसमें इंद्रप्रस्थ, हस्तिनापुर गंगा पारकर कुरूक्षेत्र तक का उल्लेख प्राप्त होता है।
6. श्रृंगनेरपुर वर्तमान इलाहाबाद के समीप स्थित है। वनवास प्रस्थान के समय कौशल प्रदेश की यात्रा के दरमियान श्रृंगनेरपुर में ऋषि भारद्वाज के आश्रम में रहने का उल्लेख रामचरितमानस में है।
7. वनवास काल में लगभग 11 वर्ष तक भगवान श्री राम लक्ष्मण व सीता चित्रकुट के आश्रमों में निवासरत् थे। विंध्याचल पर्वत श्रेणी के समीप अवस्थित था।
8. दण्डकारण्य, छत्तीसगढ़ राज्य का महत्वपूर्ण भाग है, जहां भगवान ने वनवास काल में भ्रमण किया था।
9. दण्डकारण्य के पश्चात् राम–सीता लक्ष्मण ने वर्तमान महाराष्ट्र में अवस्थित रामटेक में अगत्स्य मुनि के आश्रम में तीन दिन तक विश्राम किया था।
10. रामचरित मानस में वर्णित पंचवटी जो नासिक में गोदावरी तट पर अवस्थित है, महत्वपूर्ण स्थान है। शूर्पणखा वध, मारिच का स्वर्ण मृग के रूप में आना और लक्ष्मण रेखा पार करने के साथ सीता हरण जैसी घटनाओं का सूत्रपात हुआ।
11. सीताहरण के पश्चात् राम–लक्ष्मण सीता की खोज में यत्र–तत्र भटकते रहे एवं प्राप्त चिन्हों का अनुसरण कर दक्षिण भारत की ओर विमुख हो कर्नाटक के हम्पी के पास पम्पा सरोवर तक पहुंचे।
12. रामचंद्र जी पम्पा सरोवर के पश्चात् किष्किंधा में रूके जहां सुग्रीव से उनकी भेंट, बाली वध के बाद सुग्रीव का राज्योहरण की घटना घटित हुई। अंजनेय पर्वत व हनुमान जी से भेंट भी किष्किंधा में ही हुई।

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27Oct 2023, Revised: 09 Nov 2023, Accepted: 18 Nov 2023, Published: Jan 2024

International Journal of Economic Perspectives,*18*(01) 27-33
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROPU II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

13. सीता की खोज में वानरों को चहुं दिशा में भेजा गया जो भारतीय साम्राज्य के विशाल स्वरूप को इंगित करता है। सरस्वती नदी, सिंधु नदी, माही नदी से लेकर अंग राज्य जो वर्तमान में बांग्लादेश में अवस्थित है तक यह कार्य संपन्न हुआ अर्थात् भारतीय साम्राज्य का विस्तार वर्तमान अविभाजित भारत तक था।

14. दक्षिण भारत के विभिन्न स्थानों पर खोज करते हुए माल्यपर्वत (तमिलनाडु), चंदयानलगलम् (जटायु मरण) रामेश्वरम् भगवान श्रीराम ने शिवजी से प्रार्थना की, समुद्र देवता से समाधान हेतु प्रार्थना की, सुंदरकांड)। यही से राम सेतु का निर्माण प्रारंभ हुआ।

15. लक्ष्मण जी के मूर्छित होने के बाद संजीवनी बूटी द्रोणगिरी पर्वत से लाने की घटना सर्वविदित है, जो वर्तमान में उत्तराखंड में है।

इस प्रकार भारत के प्रादेशिक स्वरूप का संपूर्ण उल्लेख रामचरित मानस व सभी रामायणों में स्पष्टतया परिलक्षित होता है। नदियों, पर्वतों के परिप्रेक्ष्य में सीमाओं का निर्धारण एवं विभिन्न राज्यों का अस्तित्व इस बात को प्रतिपादित करता है कि भारतीय उप महाद्वीप में विभिन्न राज्यों का अस्तित्व तो था एवं समग्र रूपेण भारत वैश्विक मानचित्र में एक अखंड भूखंड के रूप में स्थापित रहा, जिसमें वर्तमान अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बर्मा, बांग्लादेश इत्यादि सभी देश संलग्न थे।

रामचरितमानस में प्राकृतिक भूगोल के आयाम –

रामचरित मानस में प्रकृति की सूक्ष्म से स्थूल तक अनेक घटनाओं के विवरण दृष्टिगत होता है। पृथ्वी एवं चंद्रमा किसी भी साहित्यिक उपमानों के प्रमुख पात्र हैं। रामचरित मानस में चंद्रमा की कलाओं के साथ–साथ चन्द्रग्रहण जैसी खगोलीय घटना का भी विवरण दृष्टव्य है :–

1. हरि हर हर जस राकेस राहु से (4–2) पृ. 7

   जे हरि और हर के यशरूपी पूर्णिमा के चंद्रमा के लिए राहू के समान है।

2. चंद्रमा में कालेपन का कारण बताते हुए तुलसीदास जी कहते हैं कि चंद्रमा में पृथ्वी की छाया दिखाई देती है।

3. वैदिक मतानुसार चंद्रमा को राहू द्वारा मारने के कारण उस पर कालिमा दिखाई देती है।

ये सभी उपमान इस तथ्य को प्रतिपादित करते हैं कि रामायण युग में भौगोलिक ज्ञान (चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण व अन्य खगोलीय घटनाएं) उच्च था।

पृथ्वी के संदर्भ में मत देते हुए उसे शेष नाग द्वारा धारण किया जाना खगोलकीय के साथ–साथ भौतिक घटनाओं की भी सूक्ष्म विवेचना रामचरित मानस में कई जगह मिलती है। तुलसीदास की जन्मस्थली बनारस होने के कारण गंगाजी और गंगा के तटीय सौंदर्य का वर्णन अपेक्षित ही है, तथापि नदियों का स्वरूप गंगानदी के अपवाह स्वरूप के उदाहरण भी परिलक्षित होते हैं। यथा –

रामभगति सुरसारितहिं जाई। मिली सुकीरति सरयु सुहाई।

सानुज राम समर जसु पावन।मिलेउ महानदु सोन सुहावन ।।

(सरयु जी रामभक्ति रूपी गंगा में मिली और पवित्र यशरूपी सुहावना महानद सोन उसमें आ मिला) दोहा – 40 बालकाण्ड

गंगा नदी का सर्पाकार प्रवाह तथा गंगा प्रवाह में सोन नदी भी मिलती है, इसका स्पष्ट उल्लेख भी है।

गति क्रूर कविता सरित की ज्यों सरित पावक पाथ की।

(तालाबों के किनारों ऐसे वृक्ष लगाने चाहिए जिससे जल स्तर ऊँचा बना रहे)

नदी–तालाबों के साथ–साथ समुद्र तल के उतार–चढ़ाव का भी वर्णन भी रामचरित मानस में मानव स्वभाव के सापेक्ष्य मिलता है।

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27Oct 2023, Revised: 09 Nov 2023, Accepted: 18 Nov 2023, Published: Jan 2024

International Journal of Economic Perspectives,*18*(01) 27-33
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROPU II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

जग बहु नर सर सरि सम भाई। जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई।

सज्जन सकृत सिंधु सम कोई। देखि पू विधु बाढ़ई जोई।। बालकाण्ड

तालाब और नदियों के समान मनुष्य ही अधिक है जो अपने ही बाढ़ से बढ़ते हैं परंतु समुद्र सा तो कोई एक विरला ही सज्जन होता है, जो चन्द्रमा को पूर्ण देखकर (दूसरों की बड़ाई) उमड़ पड़ता है। समुद्र जल तल को चढ़ाव का चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति का प्रत्यक्ष स्रंबध है। अतः मानवीय गुणों के सापेक्ष्य यह उपमा कितनी सार्थक है और भौगोलिक घटना का सम्यक ज्ञान भी।

प्रकृति के तत्वों में आकाश तत्व भी एक महत्वपूर्ण तत्व है जो धूल–कण इत्यादि से भरा रहता है। साथ ही बादलों की उपस्थिति, संघनन के पश्चात् वर्षा जल में परिवर्तन इत्यादि घटनाएं भी रामचरित मानस में प्रसंग उल्लेखित हुई है।

मेघों से वर्षा होने का वर्णन रामजी के स्नेहरूपी मंगलदायक प्रेम की वर्षा का रूपक कितना मनोहर है :–

नभ तम, धूम धूरि, जिमि सोहा।

सुमति भूमि थल हृदय अगाधू वेद पूरान उदधिधन साघू ।

बरसहिं मेघ राम सुजस वर वारी। मधुर मनोहर मंगलकारी।

पवन के संग से धूल आकाश पर चढ जाती है और वही नीचे की ओर बहने वाली जल के संग कीचड में मिल जाती है।

गगन चढइ रज पवन प्रसंगा । कींचहि मिलइ नीच जल संगा।।

रामचरित मानस में जिन पर्वतों का उल्लेख मिलता है वो इस प्रकार है

मलय पर्वत

"मलय पर्वत के संग से चंदन काष्ठ का उल्लेख" (पृ. 15, दोहा 10)

हिमगिरि पर्वत

हिमगिरि गुहा एक अति पावनि ।वह समीप सुरसरी सुहावनि ।। रा. च. पृ. 137

चढि बर बाजि बार एक राजा। मृगया कर सब साजि समाजा।।

विंध्याचल पर्वत

बिंध्याचल गभीर बन गयउ।मृग पुनीत बहु मारत भयउ।। पृ.145

नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु ।दोहा 156 पृ. 146

गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी।बिधि निर्मित दुर्गम अति भारी।।पृ.163

मेरू पर्वत

रावन आवत सुनेउ सकोहा।देवन्ह तके मेरू गिरि खोहा।। पृ.166

चित्रकूट गिरि करहु निबानू।तटं तुम्हार सब भांति सुपासू ।।पृ.437

मैकल पर्वत

सुरसारिं सरसइ दिनकर कन्या ।मेकलसुता गोदावरि धान्या ।।पृ 442

उदयाचल ,अस्ताचल एवं कैलाश पर्वत

उदय अस्त गिरि अरू कैलासू।मंदर मेरू सकल सुरबासू।। पृ 442

केवट कीहि बहुत सेवकाई।सो जामिनि सिंगरौर गवांई।।पृ 455

करमनास जनु सुरसरि परई।पृ 488

कादमगिरी पर्वत

कादमगिरी रामसखा नेहि समय देखावा।सैल सिरोमनि सहज सुहावा ।।पृ 515

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27Oct 2023, Revised: 09 Nov 2023, Accepted: 18 Nov 2023, Published: Jan 2024

International Journal of Economic Perspectives,*18*(01) 27-33
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROPU II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

मन्दराचल पर्वत

मंदराचल प्रेम आमेउ मंदस पिरहु।पृ 526

पर्वतों, नदियों, समुद्र इत्यादि के साथ–साथ सात द्वीपों का भी उल्लेख रामचरित मानस में हुआ है।

सात समुद्रों से घिरी हुई सप्तद्वीपमयी।पृ 9175

तुलसीदास के रामचरित मानस में प्रकृति वर्णन की साहित्यिक मीमांसा :–

प्रकृति अंग्रजी शब्द का हिंदी रूपांतरण है। प्रकृति–वर्णन के अंतर्गत मानव निर्मित वस्तु समूह (संस्कृत) से भिन्न पदार्थों का वर्णन सम्मिलित है – वन, पर्वत, नदियाँ, पक्षी, बादल, तारे, चंद्रमा आदि। ये सजीव भी है एवं अचेतन भी।

चैतन्य की दृष्टि से प्रकृति के दोनों रूप उपलब्ध है चेतन व अवचेतन। चेतन के दो रूप है नैसर्गिक और मानवीकृत। उदाहरणार्थ :–

चातक कोकिल कीर चकोरा, कूजत विहग नहत कल मोरा।

इस उदाहरण में पक्षियों का चित्रण नैसर्गिक रूप से किया गया है।

अवलोकि अनैकिक रूप से मृगी मृग चौकि चंक चितनै है।

न दुगै न मर्ग जिय जानि सिलीमुख पंचधरे रतिनायक हे।

इस उदाहरण में मृग–मृगी का स्वाभाविक वर्णन करते हुए भी इन पर मानवीय विशेषता का आरोपण किया है, कामदेव के रूप में यह कल्पना मानव ही कर सकता है।

बिटप बेलि नव किसलय कुसुमित सघन सुजाति

कंद मूल जल मेल रूहै अगनित अनबन भांति।

नदी उमागे अंबुधि कहु धाई। संगम करहिं तलाब तलाई।।

रामचरित मानस के तुलसीदास जी के प्रकृति वर्णन में आध्यात्मिकता का पुर भी परिलक्षित है, चित्रकूट एवं पंपा सरोवर में आलंबन रूप में।

नाथ देखिअहिं बिरव विसाला। पाकिर जंबु रसाल तमाला।

राम सीता के विरह वर्णन में भी प्रकृति का उद्दीपन है, प्रकृति की पृष्ठभूमि में सीता विरोहक्ति की बानगी देखिए :–

देखीअत प्रगट गगन अंगारा, अवनि न आवत एकौ तारा।
पावकमय ससि स्त्रवव न आगी, मानहु मोहि जानी हत भागी।। (सुंदरकांड)

प्रकृति को उपदेशात्मक स्वरूप वर्णन की परिलक्षित है। वर्षा और शरद ऋतु के वर्णन में लोकनीति संबंधित व मोक्ष संबंधी उपदेश निहितार्थ है :–

बूंद अघात सहहिं गिरी कैसे, खल के वचन संत सहै जैसे।
छद्र नदी भई चनी तोराई, जस धीरेहु धन खल बौराई।
भूमि परत मा डावर पानी, जिमि जीवहिं माया लपटानी,
सरिता जल जलानिधि महु जाई, होई अचल जिमिजीव हरि पाई।पृ 680
वायु के तेज चलने से बादल गायब हो जाते हैं।पृ 681
कबहुं प्रबल वह मारूत जहैं तहैं में बिलाहिं सुपेल पर्वत।पृ 771

बारहमासी वर्णन भी रामचरित मानस में। वर्षा, शरद, हेमंत शिशिर बसंत, सभी ऋतुओं का वर्णन किया है।

जप तप नेम जलाश्रय सारी।होइ ग्रीष्म सोषइ सब नारी।।पृ 660

जब सुग्रीव भवन फिरी आए।राम प्रवरषण गिरी पर छाए।।पृ 678

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27Oct 2023, Revised: 09 Nov 2023, Accepted: 18 Nov 2023, Published: Jan 2024

International Journal of Economic Perspectives,*18*(01) 27-33
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROPU II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

तुलसीदास के प्रकृति वर्णन का सार हम तीन बिन्दुओं में इस प्रकार कह सकते हैं :–

1. भगवान श्री राम की भक्ति प्रकृति वर्णन में छायी हुई है।
2. प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण और उसके सफल वर्णन की महान शक्ति तुलसी के काव्य में है।
3. रूपको, उत्प्रेक्षाओं, नैतिक विचार की श्रृंखला को प्रकृति के माध्यम से संजोया गया है।

राम वन गमन मार्ग छत्तीसगढ़ :–

छत्तीसगढ़ राज्य दक्षिण कौशल के नाम से जाना जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य का चन्द्रखुरी नामक स्थान माता कौशल्या की जन्मभूमि माना जाता है। वनवास काल में राम–सीता, लक्ष्मण तीनों ने छत्तीसगढ़ के उत्तरी मार्ग से प्रवेश किया है। दक्षिण में दण्डकारण्य (बस्तर) तक भ्रमण किया। तत्पश्चात् पश्चिम की ओर रामटेक गए। इस प्रकार छत्तीसगढ़ राज्य में राम वन गमन के समय के अनेक स्थान हैं जो अब छत्तीसगढ़ राज्य पर्यटन मंडल द्वारा विकसित किए जा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य में राम गमन पथ की कुल लंबाई 2260 कि.मी. है। राज्य सरकार ने राम के वनवास काल के 75 स्थानों को चिन्हित किया है। प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर संपूर्ण रामगमन पथ में सीतामढ़ी हरचौका (कोरिया), रामगढ़ (अंबिकापुर), शिवरीनारायण, तुरतुरिया, चंद्रखुरी राजिम, सिहावा (सामृषि को आश्रम), जगदलपुर, रामाराम।

(1) सीतामढ़ी – राम के वनवास काल का प्रथम पड़ाव, 17 कक्ष की गुफा, सीता की रसोई प्रमुख स्थल है।

(2) रामगढ़ – देश की पुरानी नाटयशाला के रूप में प्रसिद्ध है।

(3) शिवरीनारायण – नर–नारायण व शबरी मंदिर, वट वृक्ष के छीलके, पत्ते दोने जैसे।

(4) तुरतुरिया – महर्षि वाल्मिकी का आश्रम, लवकुश की जन्मभूमि।

(5) चंद्रखुरी – 126 तालाबों वाले इस गांव में तालाब के मध्य विश्व का एकमात्र कौशल्या माता का मंदिर है।

(6) राजिम... यह छत्तीसगढ़ का प्रयागराज है, पैरी–सोढूर और महानदी का संगम स्थल। राजीव लोचन के मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। यह जन्मस्थली है, अस्तु ननिहाल रामचंद्र जी का।

(7) सिंहावा – मुचकुंद आश्रम, अगत्स्य आश्रम, अंगिरा आश्रम, श्रृंगिमुनि, शरमंश्र ऋषि गौतम, ऋषि का आश्रम है। राम ने दण्डकारण्य के आश्रम में कुछ समय मुनियों के साथ व्यतीत किया।

रामचरित मानस के सांस्कृतिक आयाम :–

'संस्कृति' एक प्रकार का विलोम है, जो नैसर्गिक है, वह प्रकृति एवं मानव निर्मित रचना 'संस्कृति' है। रामचरित मानस सांस्कृतिक तत्वों से भरपूर है। जीवन के आचार–विचार व्यवहार, संस्कार सभी उल्लेख पग–पग पर है। तुलसीदास ने नगर, धनुष यज्ञ, नितान, बारात, विवाह लोक वाद्यों का प्रयुक्तिकरण इत्यादि का सप्रसंग वर्णन किया है। तुलसी ने मंगल संस्कारों के वर्णन में रूचि ली है। रामचरित मानस में शिव–पार्वती तथा राम–सीता के विवाहों का जमकर विस्तार से वर्णन किया है। शिवजी की बारात का रोचक दृश्य देखिए :–

कोउ मुखहीन बिपुल मुख काहू। बिनु पद कर कोउ बहु पद बाहू।।
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना। रिष्टपुष्ट कोउ अति तनखीना।।
खर स्वान सुअर सृकाल मुख गन धेष अगनित को गनै
बहु जिनिस प्रेत पिसाच जोगी जमात बरनै नही बनै।

अयोध्या से प्रस्थान करने वाली बारात में हाथियों, ऊँटों, रथों, घोड़ों का तोता बंधा है। सब तरफ धूम धड़ाका है, क्रीड़ा कौतुक गाजे–बाजे का सभा दशरथ के दरवाजे पर बंधा है :–

महावीर भूपति के द्वारे, रज होई जाई पषानु पवारे

सुर नर नारि समुंगल गाई, हआरती मंगल चारी, सरस राग बजै राहनाई।

करहि विदुषक कौतुक नाना, हास कुसल कल गाने सुजाना।

राजकुमारों कार्य, विवाह मंडप तैयार करने आदि कार्य विधि कुशल गुणियों के हाथ सौंपा :–

विधिहि बंह तिन्ह कीन्ह आरंभा, चिरचे कवलि कनक के खंभा।

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27Oct 2023, Revised: 09 Nov 2023, Accepted: 18 Nov 2023, Published: Jan 2024

International Journal of Economic Perspectives,*18*(01) 27-33
ISSN: 1307-1637 UGC CARE GROPU II
Retrieved from https://ijeponline.com/index.php/journal

भांवर के समय का वर्णन
कुँअरू कुंआरे कल भांवरि देही, नयनु लाभु सब सादर ले ही।

पर्यावरण संरक्षण :–

रीझी खोझी गुरूदेव सिख सखा सुसाहित साधु
तोरि खाटु फल होई मन तरू करि अपराध।

इस उदाहरण में प्रकृति के अवयवों का उपभोग न कर आवश्यकतानुसार कृतज्ञतापूर्वक उपभोग की संस्कृति प्रतिपादित की गई है। साथ ही प्रकृति/पर्यावरण संरक्षण की संस्कृति विकसित करने की आवश्यकता है। सो लोक प्रथाओं में शुभ प्रसंगों पर वृक्ष लगाने की परंपरा का सूत्रपात रामचरित मानस में देखिए :–

सफल पूगफल कदलि रसाला
रोपे बकुल कदम्ब तमाला
तुलसी तरूवर विविध सुहाए
कहु–कहु सिए, कहु लखन लगाए।

नैतिक मूल्यों के संरक्षण की संस्कृति :–

रामचरित मानस से राम के नैतिक मूल्यों का केन्द्र बिन्दु है। राज्य व्यवस्था, पुत्र कर्तव्य इत्यादि। मानस में बाली वध के समय रामचंद्र द्वारा बाली को छिपकर मारने के प्रश्न के उत्तर की नीति परक आदेश की बानगी

अनुज वधू भागिनी सूत नारी, सुनु सठ कन्या सम ए चारी
इन्हहि कुदृति विलोकोई सोई, ताहि पधै कधु पाप न होई।

समाज में न्याय व्यवस्था बनी, ये समाज में नीति का निरंतर पालन हो, राम, रावण का वध कर न्याय नीति व धर्म की रक्षा करते है।।

मानस में –

परद्रोह रत अति दुवट पायो सो फलु पपिवर।
अध सुनुहु दीन दयाल, राजीव नयन बिसाल।।
धर्म अर्ध काम त्रिवर्ग का अनुसरण कर आदर्श समाज की स्थापना का मर्म मानस के बालकाण्ड में निर्मित –
अरथ धरम कामादिक नारी। कहव ग्यान विग्यान विचारी।
अयोध्या कांड में पुन के धर्म का प्रतिपादक
सरल सुमाऊ राम महतारी
बोली वचन धीर धरी भारी।
तात जाऊं बलि की न्हेहु नीका
पितु आयसु सब धरम के टीका।।

दान की महत्ता – आदर दान प्रेम परिपोषै दिन असीत चले मन तोषे।

क्षमा की महिमा – सुन कपि तिति समान उपकारी नहि कोदुसुरनप्रति उपकार करै का तोरा, सनमुख होई न सकत मन मोरा।
भारतीय संस्कृति की महत्ता, सामाजिक समानता का गान भी रामचरित मानस में समाहित है।
नर वानरहि संग कहु कैसे
काही कथा मई संगति जैसे।
वानर, जटायु, केंवट, शचारी, आदित्या, सुग्रीव, निम्नगीध।
ये सब राम गमन के साथी थे जो निम्न जाति से थे। कलाओं को संरक्षण के हिमायती थे।
समप्रतः रामचरित में भारतीय मूल्यों, सांस्कृतिक गाथाओं, प्रकृति सौंदर्य के साथ–साथ भौगोलिक संदर्भों का भी उद्दीपन, प्रतिमानों, नीतिपदेशों आदि विधिक स्वरूपों में पूर्णतः प्रतिपादित हुआ है।

––=:0:=––

संदर्भ ग्रंथ

1. श्रीरामचरितमानस ... गोस्वामी तुलसीदास जी
2. डॉ. व्ही. के. श्रीवास्तव (2003) : भौगोलिक विचारों का इतिहास, वसुंधरा प्रकाशन, इलाहाबाद (उ.प्र.)

© 2024 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Submitted: 27Oct 2023, Revised: 09 Nov 2023, Accepted: 18 Nov 2023, Published: Jan 2024